International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

डॉ. एस. आर रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पंच सूत्र तथा सूचना प्रौद्योगिकी : एक विस्तृत अध्ययन

Dr. Anand Kumar Jha[1], Shweta Shilpa[2]

[1]Associate Professor, Deptt. of History, Professor Incharge, University Central Library, T.M.B.U. Bhagalpur
[2]Semi Professional Assistant, University Central Library, T.M.B.U. Bhagalpur

सारांश

डॉ0 एस आर रंगनाथन महोदय द्वारा प्रस्तुत पंचसूत्र पुस्तकालय विज्ञान के सिद्धांतों का एक महत्वपूर्ण आधार हैं, जो पुस्तकालयों के संचालन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। जैसे–जैसे सूचना प्रौद्योगिकी (ICT) ने पुस्तकालयों के कार्य करने के तरीके को प्रभावित किया है, इन पंच सूत्रों का डिजिटल युग में उपयोग और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। इस लेख में, रंगनाथन के पंच सूत्रों का ICT के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है, और यह बताया गया है कि कैसे इन सिद्धांतों का आधुनिक डिजिटल तकनीकों के साथ समायोजन हुआ है। उदाहरणों के माध्यम से यह देखा गया है कि कैसे डिजिटल कैटलॉग, ई–डेटाबेस, और ऑनलाइन संसाधनों ने उपयोगकर्ताओं की समय की बचत और जानकारी की उपलब्धता में सुधार किया है। लेख में यह भी बताया गया है कि पुस्तकालयों को अपनी सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए इन सिद्धांतों का पालन करते हुए नई तकनीकी चुनौतियों को अपनाना चाहिए। सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय विज्ञान के पाँचों नियम को इसमें समझाना चाहेंगे।

परिचय

सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय विज्ञान के पाँचों नियम को इसमें समझाना चाहेंगे। चूंकि इस पाँचों नियम के आधार पर ही पुस्तकालय को सुचारु रुप से चलाने या विस्तार करने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। इसमें पाँचवां सूत्र यह कहती है कि पुस्तकालय वर्धनषील संस्था है। अतः पुस्तकालय को समय समय पर समाज के अनुकुल नहीं किया गया तो पुस्तकालय अपनी सही स्थिति में नहीं रहेगी अर्थात् पुस्तकालय का सही रुप से विस्तार होना मुष्किल हो जाएगा। इस कारण पुस्तकालय को अपने से जोड़ने के लिए समय–समय पर इसमें परिवर्त्तन करना पड़ता है। उदाहरण स्वरुप अभी का समय IT का है। वर्त्तमान में पाठक या समाज का प्रत्येक स्तर IT को अपना रहा है इस कारण पुस्तकालय को भी IT से जोड़ेंगे तभी प्रत्येक User पुस्तकालय का उपयोग कर सकेगा। अर्थात् यहाँ पर पुस्तकालय को IT से जोड़कर ही इसका विस्तार कर सकेंगे। पुस्तकालय को परम्परागत पुस्तकालय से जोड़कर नही रख सकेगे अगर पुस्तकालय को वही स्थिति में छोड़ दे तो यह विकसित नहीं हो सकेगा।

- **सूचना की वृहद् मात्रा में वृद्धि तथा इसके विभिन्न प्रारुपो में मौजूद होनाः**–सूचना की वृहत मात्रा में वृद्धि तथा यह विभिन्न प्रारूपों में मौजूद हो रही है। सूचना को विस्फोटक युग कहा जा रहा है क्योंकि सूचना का प्ररूप में भी परिवर्त्तन हो रही है अर्थात् सूचना की माँग पाठक के रूप में बढ. रही है। यदि सूचना को इसके तहत नहीं रखा गया तो पुस्तकालय का विकास संभव नहीं है। अर्थात् यह एक कारण हैकि पुस्तकालय को समाज से जोड़ने का।
- **पाठक और उसकी आवष्यकता में वृद्धिः**–पुस्तकालय को वही पर नहीं छोड़ने का एक कारण यह भी है कि पाठक की संख्याओं में वृद्धि हो रही है और साथ ही प्रत्येक पाठक के सूचना या आवष्यकता में भी वृद्धि हो रही है। इस कारण पुस्तकालय को पाठक के अनुरूप होना चाहिए।
- **अर्न्तविषयी शोध में बढ़ोतरीः**–यह भी एक कारण है पुस्तकालय को समाज के साथ जोड़ कर रखने के लिए क्योंकि वर्त्तमान युग में अर्न्तविषयी शोध में काफी बढ़ोतरी हो गई है।
- **शोध उद्देष्य तथा शैक्षणिक के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में वृद्धिः**–इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में सूचना मिलने लगी अर्थात् सूचना को प्राप्त करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग किया जाने लगा। यह भी एक कारण है कि पुस्तकालय को IT से जोड़कर रखने का।इस वजह से पुस्तकालय के प्रत्येक नियम को IT से जोड़कर ही पुस्तकालय का विकास कर सकेंगे।

पुस्तकालय के नियम

Rules of Library

- **पुस्तक उपयोग के लिए।**
- (Books for use)
- **प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक।**
- (Every Reader for his/her)
- **प्रत्येक पुस्तक को उसकी पाठक।**
- (Every Books for its Reader)
- **पाठक का समय बचाव।**
- (Save the Time of Reader)
- **पुस्तकालय एक वर्धनषील संस्था।**
- (Library is A Growing Organism)

1. **पुस्तक उपयोग के लिए**(Books for use):-डॉ॰ रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित प्रथम सूत्र है ''पुस्तक उपयोगार्थ हो।'' प्राचीन समय में पुस्तक सिर्फ रखने या उसका संरक्षण मात्र था।इसी को दूर करने के लिए डॉ॰ रंगनाथन ने प्रथम सूत्र का निर्माण किया। इनका मानना था कि पुस्तक सिर्फ संरक्षण के लिए नहीं है, इनका उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि पुस्तक का अर्थ होता है ''लेखक का भाव लिखित रूप में प्रकट होना।'' लेखक अपने भाव को या अपने विचार को किसी पन्ने या कहीं एक जगह संरक्षण इसलिए करता है कि इसका उपयोग हो सके।वह पुस्तक या कृति वहीं के वहीं सिर्फ संरक्षण योग्य न हो इसी कमी को दूर करने के लिए प्रथम सूत्र डॉ॰ रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित किया गया ताकि पुस्तक की उपयोगिता प्रत्येक पाठक को समझ में आये। प्राचीन में संरक्षण हेतु था तत्पष्चात् इसे उपयोग पुस्तकालय में जाकर होने लगा, परन्तु वर्त्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है जिसमें पाठक घर बैठ सूचना की खोज चाहते हैं इसलिए प्रथम सूत्र का सुझाव IT के लिए कुछ इस तरह से है:–

- **ग्रंथालय स्थान(Location of Library):–**प्रथम नियम यह है कि पुस्तक उपयोग योग्य हो। यह तभी सेभव है जब इसका स्थान का सही चयन ही अर्थात् पुस्तकालय विज्ञान में प्रथम नियम के लिए स्थान का काफी महत्व है। अगर स्थन का चयन सही नहीं हो तो पुस्तकालय का सही उपयोग नहीं हो सकेगा। पुस्तकालय का स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ प्रत्येक पाठक आसानी से आ सके। यह भीड़–भाड़ से दूर, शांत, बिजली पानी की व्यवस्था, संचार का साधन इत्यादि को ध्यान में रखकर स्थान का चयन करना चाहिए ताकि प्रत्येक पाठक पुस्तक का उपयोग कर सके। अगर इसी नियम को IT से जोड़े तो इसके लिए भी स्थान तय करना जरूरी हो जाता है। इसमें स्थान के लिए Internet तथा Networking को चुना गया है ताकि प्रत्येक पाठक घर बैठे Computer का उपयोग कर e-Library के तहत पुस्तक का उपयोग कर सके अर्थात् यहाँ स्थान Internet तथा Networking माध्यम होता है जिससे पुस्तक का उपयोग ज्यादा से ज्यादा घर बैठे ही पाठक कर सके। अर्थात् यहाँ पर IT के द्वारा प्रथम सूत्र का अनुपालन स्थान के रूप में किया जा रहा है।
- **ग्रंथालय कार्यकाल(Library Hours):–**पुस्तक उपयोग के लिए यह भी जरूरी है कि पुस्तकालय का समय या पुस्तकालय ज्यादा से ज्यादा समय तक खुला रहे। अर्थात् 'पुस्तके उपयोग के लिए' इसमें समय का भी महत्व है। पुस्तक का उपयोग ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए पुस्तकालय का ज्यादा देर ता खुला रहना जरूरी है। किसी भी पुस्तकालय का समय एक समय अन्तराल के तहत ही रहता है। इस कारण पुस्तक का उपयो कम से कम हो पाता है। परन्तु इसे जब IT से जोड़ा जाए तो हम कह सकते हैं कि IT में ऐसी कोई पाबंदी नहीं है। IT तहत में 24घण्टों तक पुस्तक का उपयोग किया जा सकता है क्योंकि Internet के माध्यम से पाठक अभिष्ट सूचना को प्राप्त करने में 24घटों तक सक्षम है। इसके लिए Internet के माध्यम से e-Library का उपयोग 24घटों तक Computer के माध्यम से घर बैठे कर सकते है। अर्थात् Internet के माध्यम से किन और रात कोई भी समय पूरे विष्व में कहीं भी या किसी भी क्षेत्र में Computer का उपयोग कर अपनी इच्छानुसार पुस्तक प्रप्त कर सकते है। साथ ही IT के माध्यम से पुस्तकालय का उपयोग Internet के द्वारा पुस्तकालय के Website पर जाकर हम पुस्तक का उपयोग 24घटों कर सकते है।इस प्रकार हम पाते है कि पज के आने से प्रथम सूत्र की उपयोगिता बढ़ गई है।
- **ग्रंथालय कर्मचारी(Library Staff):–**पुस्तकालय जगत में पुस्तकों का व्यवस्थापन कर ही इसकी उपयोगिता बढ़ायी जा सकती है अर्थात् पुस्तकालयकर्मी को पुस्तकालय से संबंधित जानकारी तथा षिक्षित होनी चाहिए ताकि पुस्तकों का रख–रखाव और इससे अन्य कार्य को आसानी से करने में सक्षम हो सके। उसी तरह जब हम पुस्तक की उपयोग की बात IT के माध्यम से करते हैं तो यहाँ पर हम कहेंगे कि पुस्तकालय कर्मी षिक्षित पुस्तकालय संबंधित जानकारी तथा IT क्षेत्र जैसे Computer की भी जानकारी होनी चाहिए ताकि पुस्तकालय अब e-Library के रूप में हो गई है इस कारण इसके उपकरण भी इलेक्ट्रॉनिक है। अर्थात्

इलेक्ट्रॉनिक सामग्रियों का अत्यधिक विकास हो रहा है। इस वजह से पुस्तकालय कर्मी सारे क्षेत्र से षिक्षित होने चीहिए ताकि सूचना का रख–रखाव आसानी से बिना समय गवाए हो सके। जिससे पाठक अपनी अभिष्टसूचना को प्राप्त बिना समय गवाए ज्यादा से ज्यादा हो सके। दस तरह से हम देखे तो कहेंगे कि पुस्तकालयकर्मी भी IT के क्षेत्र में पुस्मकालय के प्रथम सूत्र को प्रभावित कर रही है।

इन तीनों पर प्रभाव पड़ा है। जिसको हम सविस्तार वर्णन कर रहे है– प्रथम नियम यह है कि पुस्तक उपयोग योग्य हो। यह तभी संभव है जब इसका स्थान का चयन सही हो अर्थात् पुस्तकालय विज्ञान में प्रथम नियम के लिए स्थान का काफी महत्व है। अगर स्थान का चयन सही नहीं ही तो पुस्तकालय का स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ प्रत्येक पाठक आसानी से आ सके। यह भीड़–भाड़ से दूर, शांत, बिजली पानी की व्यवस्था होनी चाहिए, इत्यादि को ध्यान में रखकर स्थान का चयन करना चाहिए ताकि प्रत्येक पाठक पुस्तक का उपयोग कर सके। यदि इसी नियम को IT से जोड़े तो इसके लिए भी स्थान तय करना जरूरी हो जाता है। स्थान के लिए Internet तथा Networking को ही चुना गया है ताकि प्रत्येक पाठक घर बैठे भी Computer का उपयोग कर e-Library के तहत पुस्तक का उपयोग कर सके अर्थात् यहाँ स्थान Internet माध्यम होता है जिससे पुस्तक का उपयोग ज्यादा से ज्यादा घर बैठे ही पाठक कर सके। अर्थात् यहाँ पर IT के द्वारा प्रथम सूत्र का अनुपालन स्थान के रूप में किया जा रहा है।

2. **प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक**(Every Reader for his/her):-डॉ0 रंगनाथन द्वारा द्वितीय सूत्र का कहना है कि प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले। अर्थात् यहाँ पर प्रत्येक पाठक का तार्त्पय वैसे पाठक से है जो पाठक सभी क्षेत्रों से संबंध रखता हो अर्थात् वे लोग जो सिर्फ विद्वान या फिर पढ़े–लिखे लोग ही नही बल्कि पाठक देहाती वैसे हो जो अनपढ़, बाल, गृहिणी, बुढ़ा–बुजुर्ग कर्मचारी, सेवानिवृत, इत्यादि पाठक भी शामिल षिक्षक, हो। वैसा जो कि सार्वजनिक तौर पर पाठक का विद्वान का उपयोग करने का अधिकार किया जा सके तभी पुस्तकालय पढ़े लिखे लोग विकास की ओर जाएगा अन्यथा नही। यानि प्रत्येक पाठक को पुस्तक उपलब्ध हो ताकि प्रत्येक पाठक ज्ञान के भागी बन सके। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव हैः–

राजस्व का दायित्व(Obligations of State):-

1. समुचित धन का प्रबंध करना चाहिए।
2. ग्रंथालय अधिनियम पारित करवाना चाहिए।
3. समन्वीकरण(Co-ordination)करना चाहिए।

ग्रंथालय प्राधिकरण का दायित्व(Obligation of library authority)**:-**

1. पुस्तक चयन(Book Selection)
2. कर्मचारी चयन(Staff Selection)
3. निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली(Open Access System)
4. ग्रंथालय कर्मचारी के कर्त्तव्य(Obligations of library Staff)
5. पाठको के कर्त्तव्य(Obligations of Readers)
6. संसाधनो की सहभागिता(Resourse sharing)

पुस्तकालय का द्वितीय सूत्र का कहना है कि प्रत्येक पाठक को पुस्तक मिले। इस प्रक्रिया के या यह सुझाव को अपना कर प्रत्येक पाठक को पुस्तक तो मिल रहे है परन्तु जब इसे सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ते है तो इसके सुझाव इस प्रकार है।

1. पुस्तक का चयन(Selection of Book)
   (Choice of Reating Meterial)
2. संसाधनों की सहभागिता(Resource Sharing)
3. प्रत्येक समय में उपलब्ध**(**Every time available**)**
4. **Ability to serve Disabled Users.**

पुस्तक का चयन करना द्वितीय नियम के लिए उपयोगी है। अर्थात् द्वितीय नियम का कहना है कि प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिलें। इसमें पुस्तक का चयन काफी महत्व रखता है। चूँकि पुस्तक का चयन पाठक के रुची के अनुसार होनी चाहिए क्योंकि अगर उनकी अभिरुचि के अनुसार पुस्तक नही होता है तो पाठक उस पुस्तकालय का उपयोग नही करता है। इस कारण पुस्तक का चयन द्वितीय नियम का पालन कर रहा है। प्राचीन में पुस्तक का चयन मैनुअली किया जाता था यानि पुस्तक के चयन में पाठक रुची की सूची मांगी जाती है। तत्पष्चात् इसके पब्लिष्र्स कैटलौग की सूची प्राप्त कर उससे उस पुस्तक की सूची तैयार करते है बाद आदेष देकर पुस्तक को पुस्तकालय में उपलब्ध है। अर्थात् पुस्तकालय में पुस्तक का चयन एक प्रक्रिया से गुजर कर किया जाता है। परन्तु जब इसको सूचना प्रौद्योगिकी में या वर्त्तमान युग में जोड़े तो सारी पुस्तक चयन प्रक्रिया इलेक्ट्रोनिक तरीके से किया जाता है। चूँकि

वर्त्तमान युगe – Book, e – Journal, e – Publisher Catalogueकी व्यवस्था है इस कारण इसका चुनाव Computerसे Internet या Networkingके माध्यम से खोज कर कम समय में ही पाठक की अभिरुची को ध्यान में रखकर पुस्तक का चुनाव कर लेते है। इस प्रकार हम देखे तो कहेंगें कि प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिल रही है इस कारण यहाँ पर द्वितीय नियम का अनुपालन सूचना प्रौद्योगिकी माध्यम से किया जा रहा है।

- **Resource Sharing:-**संसाधनो की सहभागिता भी द्वितीय नियम को अनुकुलन करता है। इसका अभिप्राय है संसाधन की सहभागिता कर पुस्तकालय को पूर्ण करना। यानि एक पुस्तकालय दूसरे पुस्तकालय को अपने संसाधन से चलाना उदाहरण स्वरुप Inter library loanजो कि पुस्तक को एक पुस्तकालय दुसरे पुस्तकालय को पाठक की अभिरुची को देखते हुए स्थानान्तरण करना जिससे पुस्तकालय के कार्य पर कोई प्रभाव न पड़े या पुस्तकालय के विकास में कोई रुकावट न हो, इसी उद्देष्य से संसाधन सहभागिता का उपयोग किया जाता है। परन्तु प्राचीन में इसके सबसे बड़ी समस्या बन खड़ी होती है। चुँकि पुस्तक, फर्नीचर, या कर्मचारी ही संसाधन की सहभागिता के लिए उपयोग करते है तो इसमें काफी समय के साथ श्रम और व्यय काफी र्खच होती है। इसे हम वर्त्तमान युग या सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़े तो इसके लिए निम्न प्रावधान है। Computer,Networking,Internetतथा Electronic Sourceइन सारे का उपयोग एक पुस्तकालय दूसरे पुस्तकालय से Licence मांगकर उपयोग करने में सक्षम होता है।
- **Every Time Available:**पुस्तक या Information प्रत्येक समय में उपलब्ध हो यह भी द्वितीय सूत्र के लिए महत्व रखता है। चूँकि पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तक एक सीमा तक पुस्तक का आदान प्रदान करते है परन्तु इसे अगर सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़े तो कहेंगे की ई– लाइब्रेरी मे पुस्तक या सूचना एक ही समय कई पाठक को दिया या आदान–प्रदान किया जा सकता है चूँकि इसमें एक समय में कई पाठक सूचना को सर्च या खोज कर डाउनलोड कर सकते है। यह सारी क्रिया घर बैठे या विष्व के किसी दिषा में अपना सकते है। इस कारण यहाँ पर भी प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिल रही है।

3. **प्रत्येक पुस्तक को उसकी पाठक**(Every Books for its Reader):-इस सूत्र में डॉ0 रंगनाथन का कहना है कि ''प्रत्येक पुस्तक के लिए पाठक हो'' अर्थात् यहाँ पर पुस्तक पर बल दिया गया है। पुस्तक का तार्त्पय कि पुस्तक एक स्थान पर रखी हुई या इसका व्यवस्थापन कर Shelf पर रख दिया जाता है। यह खुद चलकर पाठक के पास नही जाएगा इसके लिए पाठक को उसके पास आना है तभी प्रत्येक पुस्तक को पाठक मिल सकेगा यह कार्य पुस्तकालय कर्मचारी का है कि वह पुस्तक और पाठक को जोड़कर रखे इसके लिए निम्न सुझाव है।

1. पुस्तक चयन(Book Selection)
2. निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली(Open Access System)
3. वर्गीकृत व्यवस्थापन(Classified Arrangement)
4. नवीनतम प्रलेख शेल्फ (Recent Additions Shelf)
5. सूची (Catalogue)
6. सहज पहुंच (Easy Accessibility)
7. संदर्भ सेवा (Reterence Service)
8. प्रचार (Publicity)
9. वितरण सेवा (Extension Service)

इन सारे सूझाव को अपना कर ग्रंथालय का तृतीय नियम पालन किया जाएगा परन्तु जब इसे सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ेगें तो कुछ इस प्रकार सुझाव है।

- Online Open Access System:-निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली तृतीय सूत्र के लिए उचित है। चूँकि इसमें प्रत्येक पुस्तक को पाठक मिले इस कारण यह सूत्र उचित है। इस प्रणाली में पुस्तक लेने के लिए पाठक बिना रोक–टोक के शेल्फ पर जाकर ले सकते है। अर्थात् पाठक अपनी अभिष्ट सूचना को प्राप्त करने के लिए इस प्रणाली के तहत स्टेक के पास जो पुस्तक का व्यवस्थापन वर्गीकरण के तहत से किया होता है उस सूचना को बिना समय गंवाए आसानी से प्राप्त कर सकते है। और साथ ही साथ इस विधि से पाठक की रुचि अपनी अभिष्ट सूचना से मिलता जुलता और भी पुस्तक पर नजर जाता है जिससे उस पाठक की अभिरुची पुस्तक लेने की बढ़ जाती है इस कारण यहाँ पर प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक का पुस्तक से सीधा सम्बंध स्थापित हो रहा है। पुस्तकों को भी अवसर मिलता है कि उन्हें पाठक देख सके, जिससे प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिल सकता है। परन्तु इस प्रक्रिया में पाठक स्वयं जाकर पुस्तक या सूचना को लेता है इस कारण कुछ क्षति होने की संभावना बनी रहती है क्षति का मतलब पुस्तक को फाड़ देना, चोरी कर लेना इत्यादि से है। लेकिन जब इसे सूचना प्रौद्योगिकी से समझे तो इसका नाम को परिवर्त्तन कर Online Open Access System कहा गया है क्योंकि इस माध्यम के तहत पुस्तक या सूचना को खोजना

Internet एक तरीका है। Internet के जरिए बिना रोक–टोक अपनी अभिष्ट सूचना को खोजने में सक्ष्म होते इस माध्यम में भी पाठक अपनी अभिरुची के अलावे भी और कई पुस्तक की खोज कर लेते है। तथा साथ ही इस तरीके को अपनाने से पुस्तक की न ही चोरी कर सकते है और न ही फाड़ सकते है। अर्थात् यहाँ पर प्रत्येक पुस्तक को बिना समय गवांए तथा बिना क्षति के पाठक मिल रहे है।

- सूची :–पुस्तक की सूची पाठक अनुरुप कर शेल्फ पर रखी होनी चाहिएसूची लेखक पब्लिषर्सआख्या इत्यादि के द्वारा कर शेल्फ पर रखनी चाहिए ताकि पाठक अपनी अभिष्ट सूचना को प्राप्त आसानी से कर सके। अगर इसे हम सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़े तो इसके लिए विभिन्न प्रकार के Library Software, e-granthalay, Soul, Koha इत्यादि का निर्माण कर इसके अनुरुप या प्रारुप पर सूची तैयार की जाती है। इसके लिए खोज प्रणाली का उपयोग किया गया है। इसके तहत Boolean Oeratary के द्वारा पाठक खोज कर अभिष्ट सूचना को प्राप्त करते है। अर्थात् यहाँ पर भी पुस्तक को पाठक मिल रही है।
- Web Site :-पुस्तक को प्राप्त करने के लिए अपनी Website पर जाकर पुस्तक की खोज कर सकते है। इसके लिए Internet का आविष्कार किया गया है। अर्थात् Internet की सहायता से Website डालकर पुस्तक खोज कर सकते है। Website यानि Library Website, Library Website पर Database को प्राप्त कर सकते है। CD-ROM, Encyclopedia इन सारे चीजों की सहायता से खोज किया जाता है।
- Email :-
- Reference Service :-संदर्भ सेवा के द्वारा पुस्तक को प्राप्त आसानी से किया जा सकता है अर्थात् सही पुस्तक एवं सही पाठक के मध्य सही समय पर व्यक्तिगत रुप से सम्वध स्थापित करना संदर्भ सेवा है। चूँकि यहां पर तृतीय सूत्र का कहना है कि प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले इसके लिए संदर्भ सेवा काफी महत्व रखता है। क्योंकि प्रत्येक पाठक पुस्तक व्यवस्थापन (सूचीकरण और वर्गीकरण) को समझने मे असमर्थ होते इसी उद्देष्य से संदर्भ ग्रंथालयध्यक्ष की जरुरत होती है जो पुस्तक प्रचारक के रुप मे कार्य करती है। जिससे बिना भटकाव के पाठक अभिष्ट सूचना के पास पहुँच जाते है। जब इसे सूचना प्रौद्योगिकी से सुझाव दे तो कहेंगे कि पूर्व में फोन या आमने–सामने पाठक से सर्म्पक कर उसको पुस्तक तक पहुँचने का मार्ग बताते थे लेकिन जब वर्तमान युग या सूचना प्रौद्योगिकी के युग में email के द्वारा पुस्तक तक पहुँचाने का कार्य करते है। इस प्रक्रिया से भी तृतीय सूत्र संतुष्ट होता है।

4. **पाठक का समय बचाव**(Save the Time of Reader):-यह सूत्र का कहना है कि पाठक का समय बचे। अर्थात् वांछित सूचना को प्राप्त करने में पाठक और कर्मचारी का समय बचें। क्योंकि पाठक बहुत कम समय में सूचना की खोज करना चाहता है। परन्तु अगर इसे नही मिले तो ग्रंथालय भी आना बंद कर सकता है। इसके लिए निम्न सुझाव है।

- ग्रंथालय स्थान।
- निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली।
- वर्गीकरण तथा सूचीकरण।
- शेल्फ व्यवस्थापन।
- संकेत प्रणाली।
- संदर्भ सेवा।

- ग्रंथालय स्थान(Library Location):–पुस्तकालय ऐसी जगह पर हो, जहाँ पाठक को आने में सुविधा हो, उसे अधिक समय न लगे। यदि ग्रंथालय शहर या प्रांत के एक छोर में बना दिया जाये तो दूसरे छोर के पाठक को गंथालय का कम लाभ मिलेगा। अधिक दूरी के कारण वे ग्रंथालय जाने से वंचित हो जायेंगे। अतःगंथालय को षहर के मध्य में बनाना चाहिए जहाँ सभी पाठक कम समय तथा कम दूरी तयकर इसका लाभ प्राप्तकर सके। IT के युग में Internet तथा Networking ही स्थान माना गया है। जहाँ प्रत्येक वग के पाठक बहुत दूर से क्षण भर में घर बैठे ही सूचना प्राप्त कर लेते है। यह भी डॉ॰ रंगनाथन के चतुर्थ नियम का पालन करता है।
- निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली(Open Access System):–निर्बाद्ध प्रवेष प्रणाली में पुस्तकालय में पाठक को बिना किसी रोक टोक के शेल्फ पर जाकर पुस्तक लेने की सुविधा होती है। अर्थात् इस प्रणाली के तहत पाठक बिना समय गवाँए स्टेक तक जाकर अपनी अभिष्ट सूचना को प्राप्त कर सकता है। यह डॉ॰ रंगनाथन के चतुर्थ नियम का पालन करता है। यही प्रणाली IT से जुड़कर Open Access System कहलाया क्योंकि इस माध्यम के तहत User अपनी सूचना या पुस्तक को Internet द्वारा बिना किसी रोक टोक तथा बिना समय गवाँए क्षण भर में खोज लेता है। जो चतुर्थ नियम का अनुसरण करता है।
- वर्गीकरण तथा सूचीकरण(Classification and Cataloguing):–पहले पुस्तकालय में जा कर पाठक को Catalogue Card के द्वारा पुस्तकों को खोजना पड़ता था जिसमें कई घण्टें लग जाते थे कभी कभी तो पुस्तक भी नहीं मिलती थीं किंतु

Automated library में Cataloguing तथा Classification Online करने से User तथा Library staff दोनों के समय को बचाता है। अतः यह चतुर्थ नियम का पालन करता है।

- शेल्फ व्यवस्थापन(Shelves Arrengement):–ग्रंथालय में किताबों के शैल्फों का व्यवस्थापन भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि शैल्फ को सही ढंग से व्यवस्थित नहीं किया जाय तो पुस्तकों की दषा अस्त–व्यस्त हो जायेगी। ऐसे में पाठक को अपनी पुस्तकों को प्राप्त करने में कठिनाई होगी। पाठक का अधिक समय भी खर्च होगा अतः ग्रंथालय में शेल्फ व्यवस्थापन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। ग्रंथालय स्वचालित होने के बाद संदर्भ सेवा डॉ॰ रंगनाथन के चतुर्थ सूत्र का अनुसरण किया जाता है। यह पाठकों के समय को बचाने में भूमिका निभाता है।
- संदर्भ सेवा(Reference Service):–संदर्भ सेवा का पुस्तकालयों में विषेष महत्त्व है। पुस्तकालय के संदर्भ में दो वस्तुएँ 'पाठक तथा पाठ्य सामग्री' है, जिनके बीच संपर्क स्थापित करने में संदर्भ सेवा प्रदान की जाती है। सामानय रूप से संदर्भ सेवा का अभिप्राय ग्रंथालयी द्वारा पाठक को प्रदान की गई व्यक्तिगत सेवा है। डॉ॰ रंगनाथन के अनुसार–''व्यक्तिगत सेवा द्वारा पाठक एवं पुस्तक में संपर्क स्थापित करने की प्रक्रिया संदर्भ सेवा है।''

  ग्रंथालय को IT से जोड़ने के बाद संदर्भ सेवा बहुत ही आसान गई। अब User को ग्रंथालय आकर इस सेवा का लाभ उठाने की बदले घर बैठे ही यह सेवा मिल जाती है, जिससे User के ग्रंथालय आने जाने के समय का बचाव होता है तथा वह कुछ ही पल में अपनी जानकारी Online प्राप्त कर लेते है।

5. **पुस्तकालय एक वर्धनषील संस्था**(Library is A Growing Organism):-रंगनाथन ने पुस्तकालय की तुलना मानव जीवन के विकास से किए है। उनके अनुसार मानव जीवन में दो प्रकार के विकास होते है (1) बाल विकास (Child Growth) (2) व्यस्क विकास (Adult Growth) जहाँ बाल विकास में बच्चों का विकास स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है वही व्यस्क विकास में आन्तरिक विकास होता है जो दिखाई नही देता किन्तु आन्तरिक विकास में यदि मानव के मस्तिष्क का पूर्ण रुप से विकास नही हो तो वह विकास कोई काम का नही रह जाएगा।उसी प्रकार पुस्तकालय में भी दो तरह से विकास होते है। बाल विकास में जहाँ पुस्तकालय के आकार पुस्तकों की संख्या पाठको की संख्या तथा कर्मचारियों की संख्या बढ़ती है जो स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। किन्तु इसके विपरीत व्यस्क विकास में यदि पाठको की संख्या में कर्मचारियों की संख्या पुस्तकों/प्रलेखो की संख्या में यदि वृद्धि में होता है तो वह लोगो को दिखाई नही देता है। मनुष्य के मस्तिष्क के विकास के सामानान्तर यदि पुस्तकालय में समय के अनुसार आधुनिक तकनिकियों का विकास नही किया जाय तो पुस्तकालय विकास में पिछड़ जाता है। कहने का तात्पर्य है कि यदि पुस्तकालय में समय के अनुसार उसे मैनुअल से स्वचालन (Automation) डिजिटलाइजेषन नही करे तो पाठको के मांग के अनुसार सूचना उपलब्ध नही करा सकते है। फलस्वरुप पाठको की संख्या में कमी आनी शुरु हो जाएगी।वर्त्तमान समय में e-Book, e-Journal, आदि पुस्तको की छपाई होने लगी है। यदि पुस्तकालय को इन्टरनेट से नही जोड़े तो इन सारे आधुनिक प्रलेखन को पाठक को उपलब्ध नही करा पाएंगे। फलस्वरुप पुस्तकालय के विकास के लिए CD-Rom तथा Online व्यवस्था करना आवष्यक है। इसके आलावे बहुत सारे Encyclopedia की छपाई बंद कर दी गई है तथा उसका प्रकाषन CD-Rom में किया जाता है।वर्त्तमान समय में पाठक दुनिया के विभिन्न पुस्तकालय के विभिन्न पुस्तकों को पढ़ते हैं इसलिए विकास के दृष्टि को देखते हुए पुस्तको को Digitalization कर उसे Online कर दे तो पाठक घर बैठे भी उन सारे पुस्तको को पढ़ सकता है। इसके साथ ही पाण्डुलिपि तथा Rare Document को भी यदि Digitalization कर दिया जाय तो हम अपने बीते हुए समय के प्रलेखन की भी जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते है।

इस तरह रंगनाथन के पंचम सूत्र को ध्यान में रखते हुए परिवर्तित परिपेक्ष्य में पुस्तकालयो को परिवर्तित करना अति आवष्यक है।

मैनुअल पुस्तकालय

↓

Library Automation

↓

Digital Library → e- library

↓

Virtual library

इस तरह से रंगनाथन के पंचम सूत्र को इस तरह लिख सकते है।

Information is growing at very Fast rate in various formats.

दुनिया आज पेपर लेस समाज की ओर बढ़ रहा है e- Library का विकास Web पर विकसित किया जा रहा है। अभी लगभग 400 Million Web Page Web पर डाला जा चुका है ज्ञान के विभिन्न शाखाओं को विभिन्न तरह के डाटावेस पर दुनिया में विकसित किया जा रहा है। e–Books तथा e–Journal की संख्या काफी बढ़ गई है। e-Book का विकास विष्व उपभोक्ता के लिए किया जा रहा है। Web पर प्रलेखन की संख्या की बढ़ने के साथ–साथ Web के गति तथा तकनीकी में भी काफी तेजी से परिवर्त्तन हो रहा है तथा उपभोक्ता भी समय के अनुसार अपने को परिवर्तित कर रहा है।

संदर्भ सूचीः

1ण रंगनाथन, स. र. (1931). पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र. मद्रासः मद्रास पुस्तकालय संघ।
2ण रंगनाथन, स. र. (1962). पुस्तकालय विज्ञान और आधुनिक प्रौद्योगिकी. कोलकाताः भारतीय पुस्तकालय और सूचना विज्ञान संघ।
3ण धनवंदन, एस. (2017). ''डिजिटल युग में रंगनाथन के पांच सूत्रों का अनुप्रयोग।'' अंतर्राष्ट्रीय सूचना विज्ञान पत्रिका, 24(3), 150–158।
4ण कौर, आर., और शर्मा, एस. (2019). ''पुस्तकालयों में सूचना प्रौद्योगिकीः रंगनाथन के पांच सूत्रों का रूपांतरण।'' पुस्तकालय और सूचना विज्ञान पत्रिका, 14(2), 65–72।
5ण शर्मा, पी. (2018). ''सूचना प्रौद्योगिकी का पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता–केंद्रित सेवा में योगदान।'' पुस्तकालय प्रौद्योगिकी रिपोर्ट्स, 54(1), 20–30।
6ण **Ranganathan, S. R.** (1963). *The Five Laws of Library Science*. London: International Federation of Library Associations and Institutions (IFLA).
7ण **Chandavarkar, S.** (1989). *Library Science: A Handbook for Information Professionals*. New Delhi: S. Chand & Compan